© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

माध्यमिक स्तर के मूक–बधिरान्ध में अक्षम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एआकांक्षा स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

[1]Sarjeet Singh, [2]Nav Prabhakar lal Goswami
[1]Researche Scholar, [2]Ph.D Supervisor , Mahatma Jyoti Rao Phoole University Jaipur

प्रस्तावना

कोई भी लक्ष्य तब मूल्य बन जाता है। जब उसमे कोई रूचि लेता है। कोई भी चीज तब निशाना बन जाती है। जब उस पर कोई निशाना लगाता है। .आर. बी. पैरी

'हम देह से अधूरे पर आत्मा से पूरे ।
पूरे शरीर वालों हमको गले लगा लो।।'

हमारा समाज प्रारम्भ से ही किसी भी प्रकार से विकलांग वर्ग के बालको के प्रति हेय नजरिया रखता है। जिसको ध्यान मे रख कर श्री मधुर शास्त्री जी की इन पंक्तियो ने स्पष्ट किया है कि समाज विकलांगों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार करता है विकलांग वर्ग सदा से ही समाज में उपेक्षित वर्ग रहा है । उपेक्षा ही नही घृणा भी इनके प्रति देखने को मिलती है। प्राचीन काल से ही मानव समाजों ने विकलागों को उचित सम्मान एवं अधिकार नही दिया ऐसा क्यों किया गया ? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही मुश्किल है । जब कभी हम विकलांगो के बारे में सोचते है , विचार करते है या बोलते हैं तब हमें अनायास ही प्लेटों और अरस्तु के समय की याद आ जाती है । उस समय शारीरिक विकलांग या मानसिक विकलांग को उसके या उसके पूर्वजों द्वारा किये गये पापों का फल एवं ईश्वर का अभिशाप माना जाता था। जब तक की सृष्टि के निर्माता ईश्वर स्वयं ही उस पर कृपा दृष्टि न डाले । किसी व्यक्ति का विकलांग होना भाग्य की ऐसी मान समझी जाती थी, जिससे विकलांग जीवन भर उठ–बैठ नहीं सकता था। इसी धारणा के कारण विश्व के बहुत से भागों में विकलांगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। एक समय इतिहास में ऐसा भी था जब पालन–पोषण करने के बजाय उसकों तुरन्त मौत के घाट उतार दिया जाता था। हमारें देंश भारत में भी वर्षो तक विकंलांगों कों परजीवी समझा जाता था। इस प्रकार सदियों तक विकलांग तिरस्कृत एवं उपेक्षित ही रहें। परिणामस्वरूप उनका जीवन उनके लिए ही

भार बन जाता था। समाज में जहां विकलांगों के प्रति नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति भी हैं ओर समय के साथ–साथ लोंगों में उनकें प्रति सकारात्मक सोंच का भी विकास हुआ है। समाज ने यह माना है कि विकलांग व्यक्ति भी हमारी तरह मनुष्य है। उनकी भी हमारी ही तरह समस्याएं हैं, इच्छाएं हैं, आकांक्षाएं है। विकलांग व्यक्ति में भी सामान्य मनुष्य की भॉति ही सुख और दुःख की अनुभूति होती है। उसकों भी खुशी से जीवन जीनें का अधिकार है। उसकों शिक्षा एवं जीवन की अन्य सभी सुविधाएं प्राप्त करने का अधिकार है। समाज तथा राष्ट्र का कर्तव्य है कि उनको समर्थ एवं समक्ष बनाने के लिए सुविधाएं प्राप्त करने का अधिकार एवं अवसर उपलब्ध कराएं। इन्ही बातो को ध्यान में रखते हुऐ समाज में परिवर्तन हो रहे है और समाज मूक–बधिरान्ध में अक्षम बालको के प्रति काफी हद तक मित्रवत दृष्टिकोण से व्यवहार कर रहे है। **जैसा स्वर्गीय इन्दिरा गांधी ने कहा था – श विकलागों को दया नही ए सहयोग की जरूरत है। उन्हे दान नही ए बल्कि अपने अन्य मानव साथियो की भांति अधिकार चाहिए।श** इसी कम को आगे बढाते हुऐ भारत के वर्तमान **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी** ने इनका उत्थान एवं उनको मुख्य धारा में लाने के लिए षिक्षित करने के लिए विभिन्न योजनाओ का संचालन कर रहा है। दिव्यांगो से जुडे विधेयक **निःषक्त व्यक्ति अधिकार विधेयक 2014** (**राइट्स आफ पर्सन दि डिसएबिलिटी बिल आरपीडीबी**) को संसद में सर्वसम्मति से पारित करा दिया ओर उनके विकास के लिए **पीएमजीदिषा योजना** के तहत उनको सुचना तकनीक में प्रषिक्षित कर स्वरोजगार हेतु विषेष अनुदान पर लोन दिया जा रहा है जिससे वे समाज की मुख्य धारा से जुड सके।

अध्ययन का महत्व : –

आज का मानव ज्यों–ज्यों वैश्विक एवं भौतिक क्षैत्र में उन्नति करता जा रहा है, त्यों–त्यों उसमें नैतिक मूल्यों का भी पतन होता जा रहा है। आज का मानव केवल अपने ही विकास की बात सोचता है। उसे समाज, समाज के लोगों तथा समाज के विकास के बारें में सोचने का अवसर हीं नहीं मिलता है। मूक एदृष्टि व श्रवण में अक्षम बालक जो कि समाज का ही एक अंग है उनकें बारें में समाज के सामान्य लोंगों का दृष्टिकोण उचित नहीं है। उन्हे हम हीनता के दृष्टिकोंण से देंखते है। जिससे उसका ष्शारीरिक, मानसिक तथा सांवेगिक विकास अवरूद्ध होता है। क्योकि यह आज का बालक, कल का नागरिक ही नही, वरन् राष्ट्र निर्माता भी बनेगा। देश के मूकए दृष्टि व श्रवण में अक्षम बालक–बालिकाएं, जिनकी हमारे समाज में उपेक्षा की जाती रही है तथा जो विविध क्षेत्रों में अध्ययन कर रहें है, उनमें सफलता की इच्छा कितनी है और उनकी संवेगात्मक परिपक्वता व आकांक्षा स्तर उपलब्धि के अनुकूल है अथवा नहीं। अतः हमारे लिए यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि हम अपने देश के इन विधार्थियों की ष्शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, आकांक्षा स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन, देश के भावी राष्ट्र निर्माता के रूप में करे।

शोध अध्ययन का औचित्यः–

प्रस्तुत शोध कार्य **श्माध्यमिक स्तर के मूक–बधिरान्ध में अक्षम विधार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एआकांक्षा स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन श** कर समाज में फैली उन कुरूतियो को खत्म करने का प्रयास किया गया है जहा मनुष्य शारीरिक और मानसिंक विकलांग बालको को तिरष्कार की भावना से देखा जाता है अतः उनको समाज की मुख्य धारा से जोडने के लिए यह प्रयास किया गया।

1. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्रो के शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्रो के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्रो की सवेंगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्राओं के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के मूक ए दृष्टि एवं श्रवण मे अक्षम छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

न्यादर्षः–

प्रस्तुत शोध कार्य मे जयपुर ओर अजमेर संभाग के जिलो का चयन किया है। जिसमे मुख्य रूप से अलवर ए जयपुर जिले की माध्यमिक स्तर तक की विधालयो मे अध्ययनरत मुक–बधिरान्ध कुल 150 छात्रो का अध्ययन किया गया है।